अली बाबा
और चालीस चोर

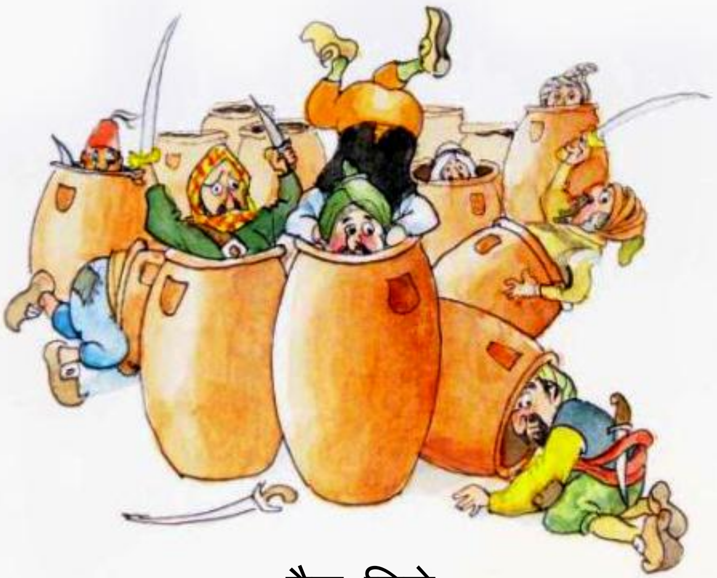

वैल बिरो

फारस के एक दूर कस्बे में अली बाबा नाम का एक मेहनती आदमी रहता था. वह पास के जंगल से लकड़ियाँ काटकर और उन्हें शहर के बाज़ार में बेचकर अपनी जीविका चलाता था.

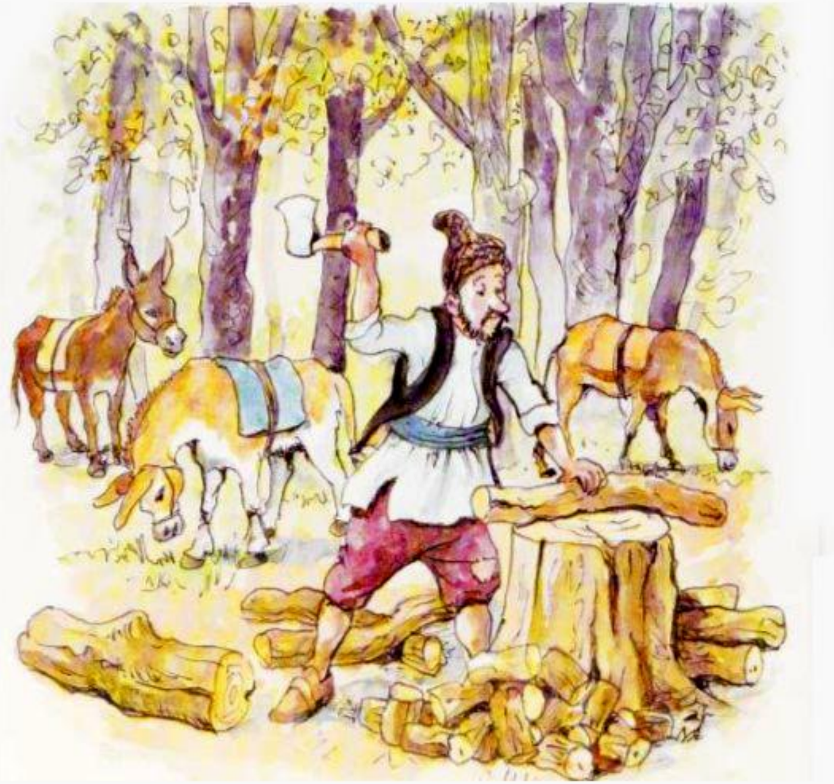

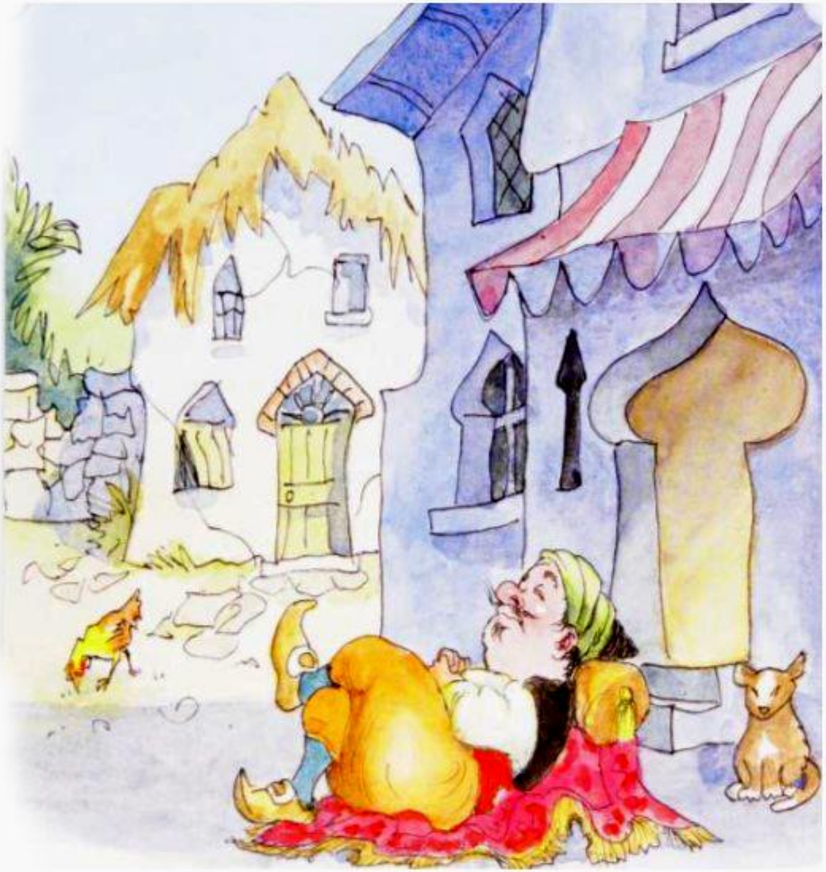

अली बाबा के बगल में उसका चचेरा भाई कासिम रहता था. वह काफी अमीर था, इसलिए उसे काम करने की कोई ज़रूरत नहीं थी, और इस वजह से वह मोटा और आलसी हो गया था. वह लालची भी था, और उन लोगों से ईर्ष्या करता था जिनके पास उससे ज़्यादा पैसा था.

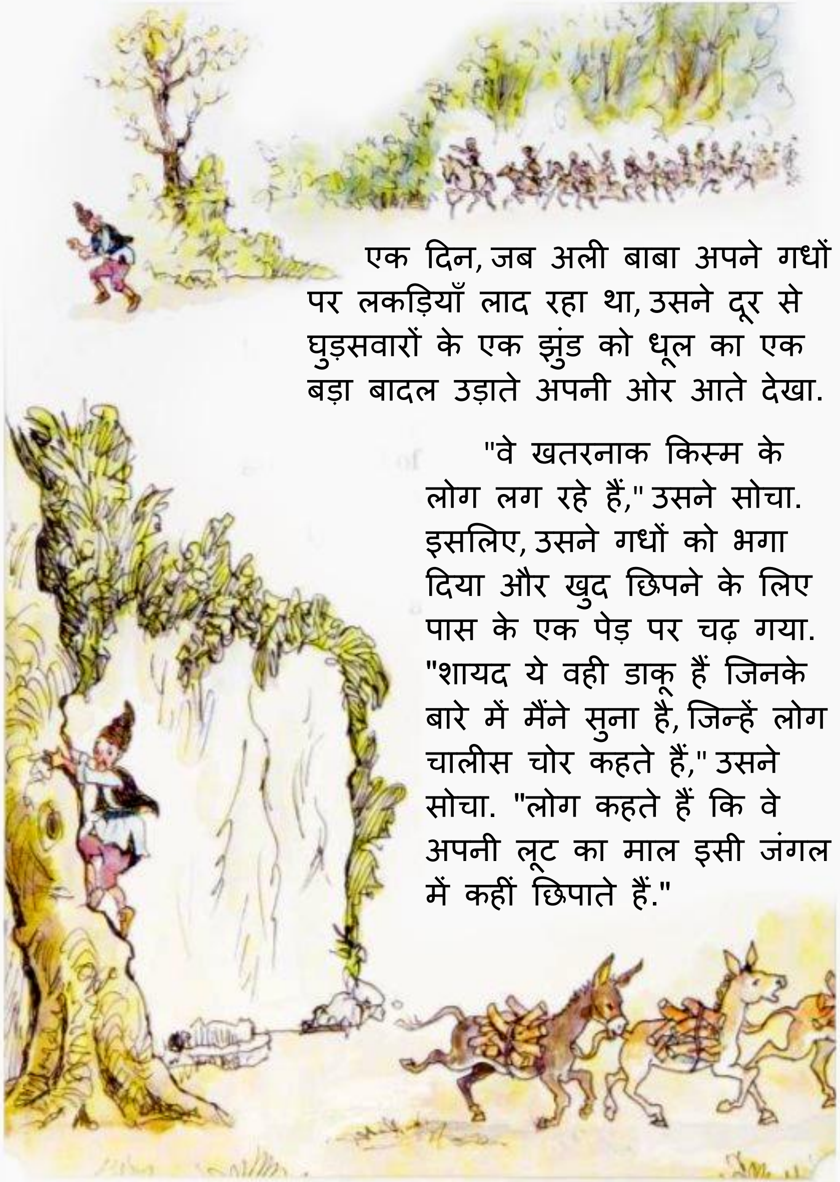

एक दिन, जब अली बाबा अपने गधों पर लकड़ियाँ लाद रहा था, उसने दूर से घुड़सवारों के एक झुंड को धूल का एक बड़ा बादल उड़ाते अपनी ओर आते देखा.

"वे खतरनाक किस्म के लोग लग रहे हैं," उसने सोचा. इसलिए, उसने गधों को भगा दिया और खुद छिपने के लिए पास के एक पेड़ पर चढ़ गया. "शायद ये वही डाकू हैं जिनके बारे में मैंने सुना है, जिन्हें लोग चालीस चोर कहते हैं," उसने सोचा. "लोग कहते हैं कि वे अपनी लूट का माल इसी जंगल में कहीं छिपाते हैं."

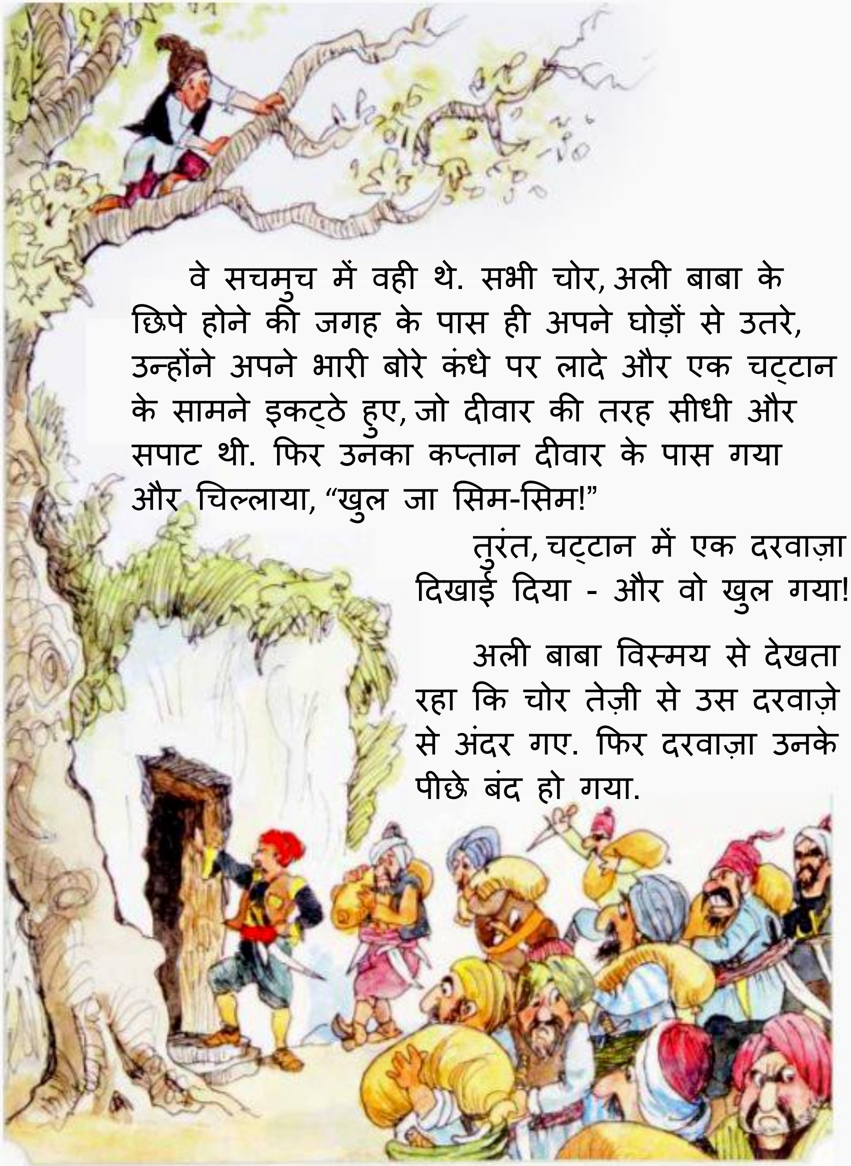

वे सचमुच में वही थे. सभी चोर, अली बाबा के छिपे होने की जगह के पास ही अपने घोड़ों से उतरे, उन्होंने अपने भारी बोरे कंधे पर लादे और एक चट्टान के सामने इकट्ठे हुए, जो दीवार की तरह सीधी और सपाट थी. फिर उनका कप्तान दीवार के पास गया और चिल्लाया, “खुल जा सिम-सिम!”

तुरंत, चट्टान में एक दरवाज़ा दिखाई दिया - और वो खुल गया!

अली बाबा विस्मय से देखता रहा कि चोर तेज़ी से उस दरवाज़े से अंदर गए. फिर दरवाज़ा उनके पीछे बंद हो गया.

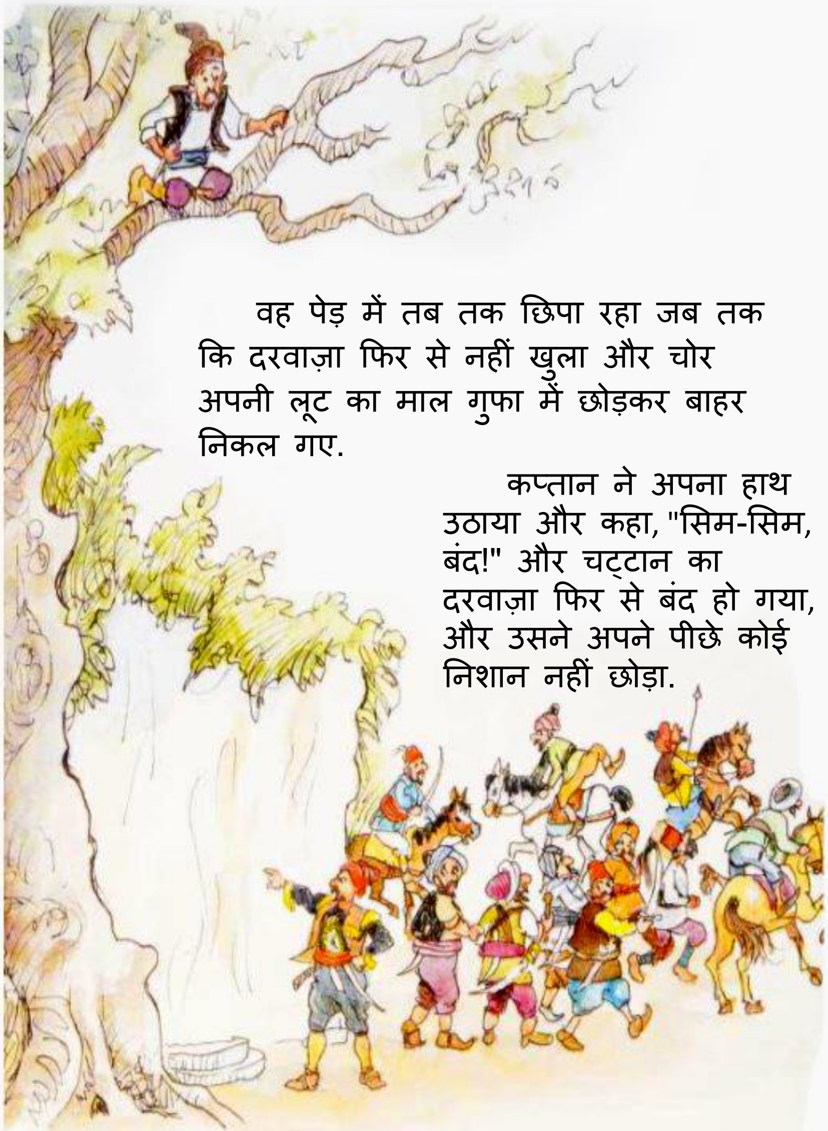

वह पेड़ में तब तक छिपा रहा जब तक कि दरवाज़ा फिर से नहीं खुला और चोर अपनी लूट का माल गुफा में छोड़कर बाहर निकल गए.

कप्तान ने अपना हाथ उठाया और कहा, "सिम-सिम, बंद!" और चट्टान का दरवाज़ा फिर से बंद हो गया, और उसने अपने पीछे कोई निशान नहीं छोड़ा.

जैसे ही चोर भाग गए, अली बाबा अपने छिपने की जगह से नीचे उतरा और अपने आज्ञाकारी गधों को वापस बुलाया.

जो कुछ उसने अभी-अभी देखा था, उसके बारे में सोचकर, वह सोचने लगा. "अगर मैं भी कप्तान की तरह करूँ, तो क्या दरवाज़ा फिर से खुल जाएगा? आख़िरकार, अब मुझे भी वो जादुई शब्द पता हैं..."

बिना किसी और देरी के, उसने अपनी बाहें उठाईं और चिल्लाया, “खुल जा सिम-सिम!” और, क्या आप यकीन करेंगे, चट्टान का दरवाज़ा खुल गया!

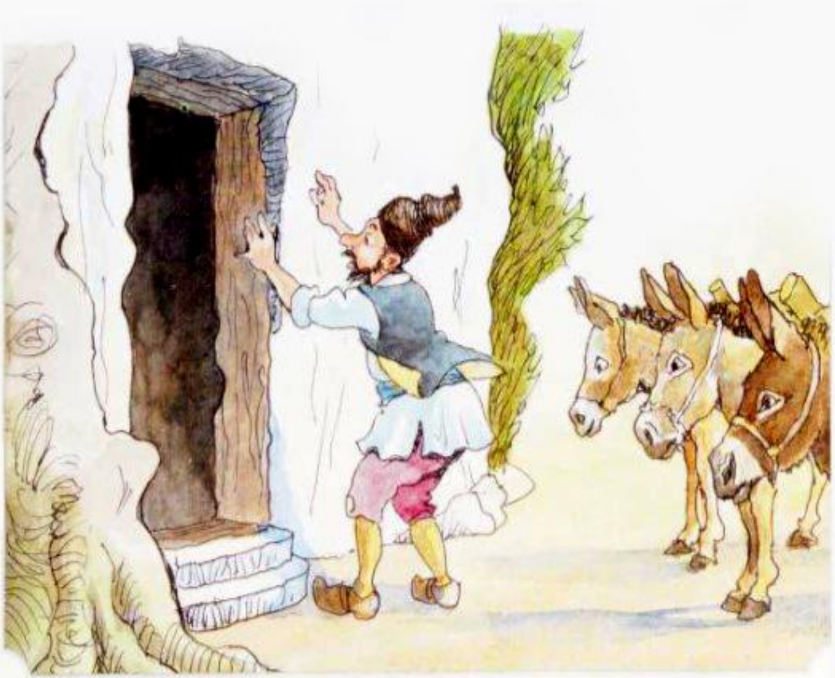

अंदर उसे अपार खज़ाना मिला. गुफा सोने, शानदार रत्नों, चाँदी के बर्तनों और सोने-चाँदी की बोरियों से भरी हुई थी. यह गुफा ज़ाहिर तौर पर उन कुख्यात चोरों का गुप्त भंडार थी. क्या गज़ब की खोज थी!

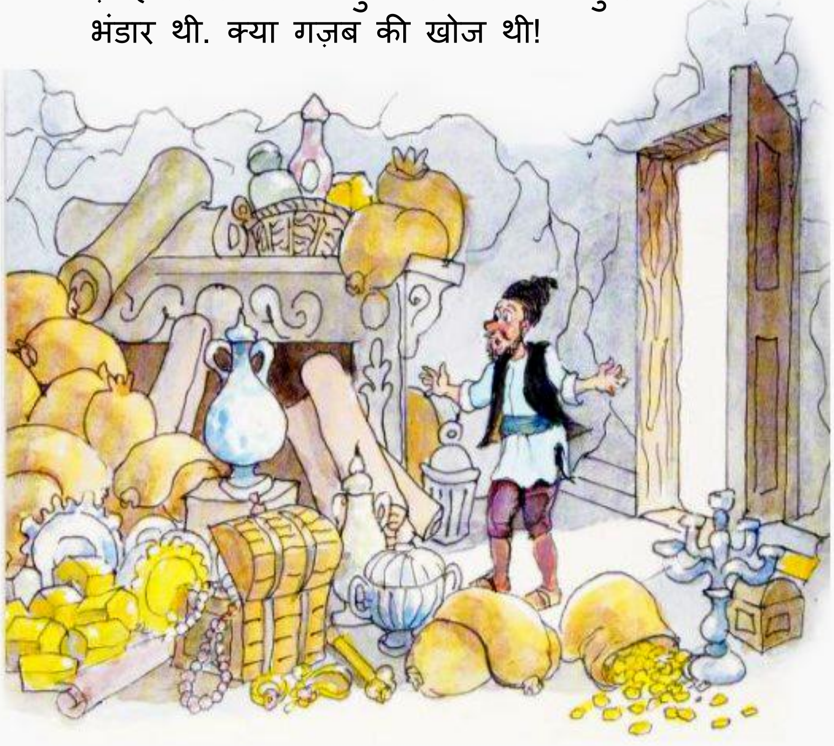

अली बाबा को अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था. वह सोने की तीन बोरियाँ दरवाज़े तक ले गया, जो उसके पीछे बंद हो गया था, और चिल्लाया, “खुल जा सिम-सिम!”

"मैं चोर नहीं हूँ," उसने खुद से कहा, "लेकिन मुझे चोरों द्वारा चुराई गई चीज़ों को लेने में कोई बुराई नहीं दिखती." वह बोरियों को गुफा से बाहर ले गया और उन्हें अपने धैर्यपूर्वक इंतज़ार कर रहे गधों पर लाद दिया.

फिर उसने पुकारा, "सिम-सिम, बंद!" और दरवाज़ा बंद होकर चट्टान में गायब हो गया.

संतुष्ट होकर, अली बाबा अपने गधों को घर ले गया.

अली बाबा की पत्नी को उसकी कहानी पर यकीन ही नहीं हुआ, लेकिन जब उसने सिक्कों की बोरियाँ ज़मीन पर खाली कीं, तो वह खुशी से चीख पड़ी और उन्हें गिनने के लिए घुटनों के बल गिर पड़ी.

"प्यारी पत्नी, इतने सारे सिक्के हैं कि तुम गिन भी नहीं पाओगी." उसने पत्नी से कहा. "तुम पड़ोस में जाकर एक मापने वाला बर्तन उधार ले आओ."

अली बाबा की पत्नी गई और उसने कासिम की पत्नी से मापने वाला बर्तन उधार माँगा. लेकिन उस औरत को कुछ शक हुआ. "इन्हें बर्तन से मापने की क्या ज़रूरत है?" उसने सोचा.

वह बर्तन लेने रसोई में गई, लेकिन चालाकी दिखाते हुए उसने चुपके से उसके तले में थोड़ा चिपचिपा शहद डाल दिया. "हमें जल्द ही पता चल जाएगा!" वो मन ही मन बुदबुदाई.

और उसने वैसा ही किया. जब बर्तन वापस किया गया, तो उसे शहद में एक सोने का सिक्का चिपका हुआ मिला. उस शाम उसने उसे अपने पति कासिम को दिखाया. "देखो, कासिम! तुम्हारा वह चचेरा भाई, अली बाबा, धोखेबाज़ है!"

"वह गरीब होने का दिखावा करता है, फिर भी सोने को बर्तन से मापता है. ऐसा कैसे हो सकता है?"

कासिम इतनी ईर्ष्या से भर गया कि वह जवाब मांगने के लिए तुरंत अली बाबा के दरवाजे पर जा पहुँचा. अली बाबा, नेकदिल और भरोसेमंद था और उसने अपने चचेरे भाई को खजाने के बारे में सब कुछ बता दिया - जिसमें छिपे हुए दरवाजे को खोलने के शब्द भी शामिल थे.

और तो और, उसने कासिम को यह भी कहा कि अगर वह इस बात गुप्त रखेगा तो वह धन आपस में बाँट लेंगे.

लेकिन कासिम का किसी के साथ, यहाँ तक कि अली बाबा के साथ भी, धन साझा करने का कोई इरादा नहीं था.

अगली सुबह-सुबह वह छह खच्चरों पर बोरियाँ लेकर निकल पड़ा, जिन्हें वह खजाने से भरना चाहता था.

जब वह अली बाबा द्वारा बताई गई जगह पर पहुँचा, तो उसने पुकारा, “खुल जा सिम-सिम!” चट्टान की सतह पर फिर से दरवाजा दिखाई दिया और खुल गया. कासिम अंदर गया और दरवाजा उसके पीछे बंद हो गया.

खजाने को देखकर कासिम उत्साह से काँप उठा, लेकिन वो समय बर्बाद नहीं करना चाहता था. लालच के उन्माद में, वह इधर-उधर भागा, लूट के बड़े-बड़े थैलों को दरवाजे तक घसीटता रहा, जब तक कि उसकी हालत ऐसी नहीं हो गई कि वह दरवाजा खोलने का जादुई शब्द तक भूल गया.

“वो शब्द बीजों से जुड़ा है. यह तो मुझे पता है. लेकिन क्या? सूरजमुखी खोलो? घास के बीज खोलो? खसखस खोलो?” सब बेकार निकला. उसकी सूझ काम नहीं करी और दरवाज़ा पूरी तरह से बंद रहा.

कासिम को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, और वह निराशा में गिर पड़ा.

वह अभी भी खजाने के बीच एक दयनीय ढेर में धँसा हुआ था, तभी कुछ देर बाद, उसने घोड़ों के टापों की अशुभ आवाज़ सुनी.

जब गुफा के बाहर एक कर्कश आवाज़ आई, तो वह घबरा गया:

“खुल जा सिम-सिम!”

दरवाज़ा खुला और चालीस चोरों का सरदार तलवार हाथ में लिए अंदर आया.

"हाथ ऊपर करो, कम्बख्त चोर!" वह चिल्लाया. "मैंने तुम्हारे खच्चरों को बाहर देखा था, और तब मुझे पता चला है कि तुमने हमारा खज़ाना चुराने की योजना बनाई है." कासिम डर के मारे काँप उठा, सरदार ने अपनी तलवार उठा ली.

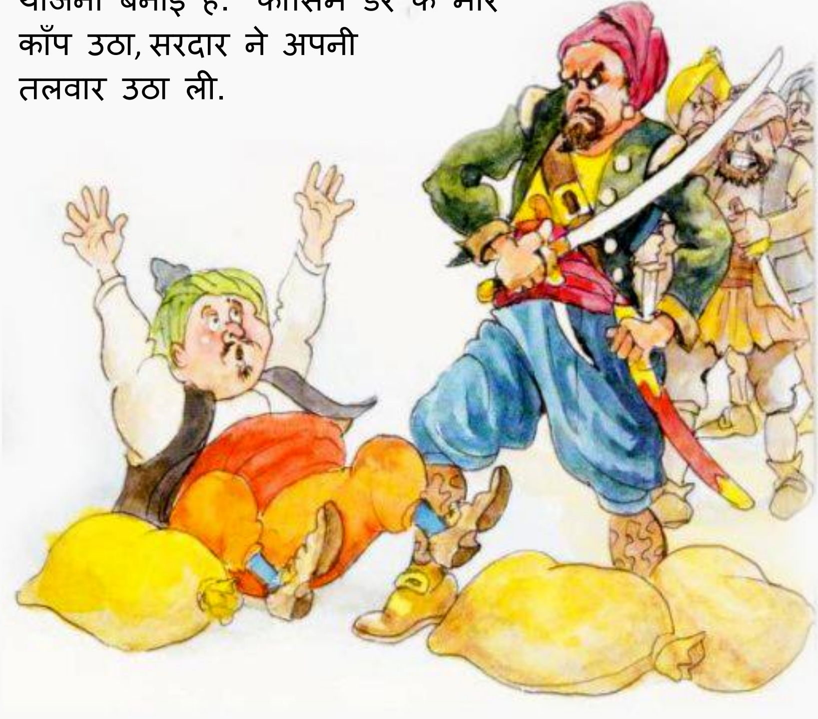

"तुम हमारे साथ चलो." सरदार ने कासिम को आदेश दिया. "हमने अपने दल का एक सदस्य खो दिया है, और तुम्हें हमारी संख्या फिर से चालीस तक पहुँचानी होगी."

उन्होंने कासिम के हाथ उसकी पीठ के पीछे बाँध दिए और उसे उसके ही एक खच्चर पर बिठा दिया, फिर वे अपने ठिकाने की ओर चल पड़े.

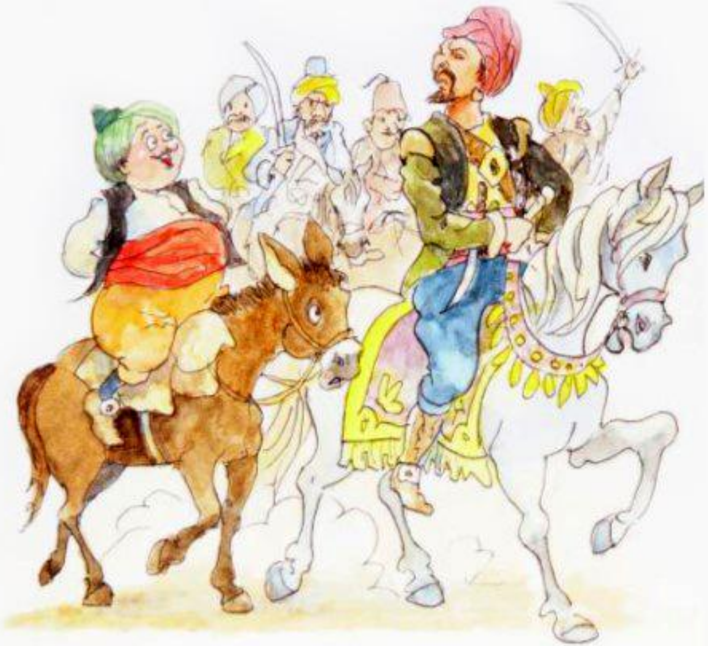

अपनी स्थिति का पूरा फायदा उठाने के लिए, कासिम ने अपने अपहरणकर्ताओं की चापलूसी करने का फैसला किया. उसने कहा, "मैं अली बाबा नाम के एक आदमी को जानता हूँ जो तुम्हारी गुफा में पहले ही जा चुका है और तुम्हें लूट चुका है. अगर तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि वह कहाँ रहता है."

यह सुनकर सरदार सोचने लगा. "अच्छा तो इस चोर ज़रूर कोई साथी है जो हमारा राज़ जानता है? हमें उस अली बाबा से जल्द ही छुटकारा पाना होगा. लेकिन कैसे?"

जब तक वे अपने ठिकाने पर पहुँचे, चोरों के सरदार ने एक योजना बना ली थी.

कप्तान ने आदेश दिया: "कल सुबह कासिम के खच्चरों को शहर ले जाओ और चालीस तेल के ड्रम और उन्हें ढोने के लिए चौदह और खच्चर ढूँढ़ो - यानी बीस ड्रम. उनमें से एक ड्रम में तेल भरना. फिर उन सबको यहाँ वापस लाना."

अगले दिन दोपहर तक सब कुछ तैयार था.

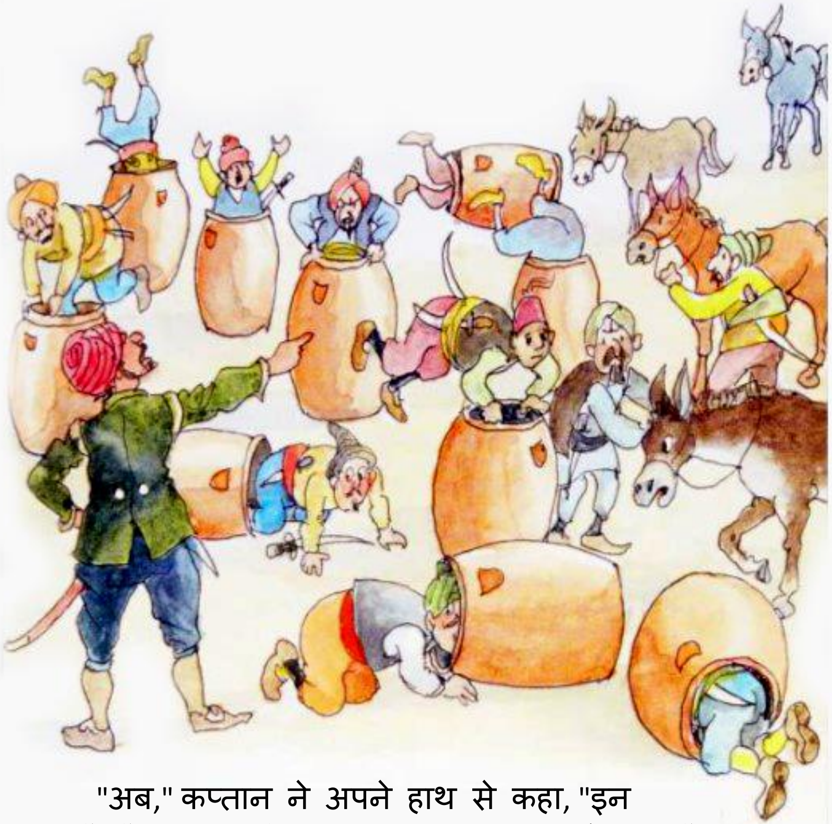

"अब," कप्तान ने अपने हाथ से कहा, "इन ड्रमों में घुस जाओ - तुम भी, कासिम - और तुममें से जो आखिरी आदमी हो वो खच्चरों पर ड्रमों को जोड़ियों में लादे. एक बार ड्रम के अंदर घुसने के बाद, न तो बाहर आना और न ही कोई आवाज़ करना. बस मेरे आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा करो."

उस शाम कप्तान बीस खच्चरों की एक कतार को पहाड़ी पर अली बाबा के घर ले गया. हर खच्चर पर दो तेल के ड्रम थे, और उनमें से एक ड्रम को छोड़कर बाकी सभी के अंदर एक चोर छिपा था.

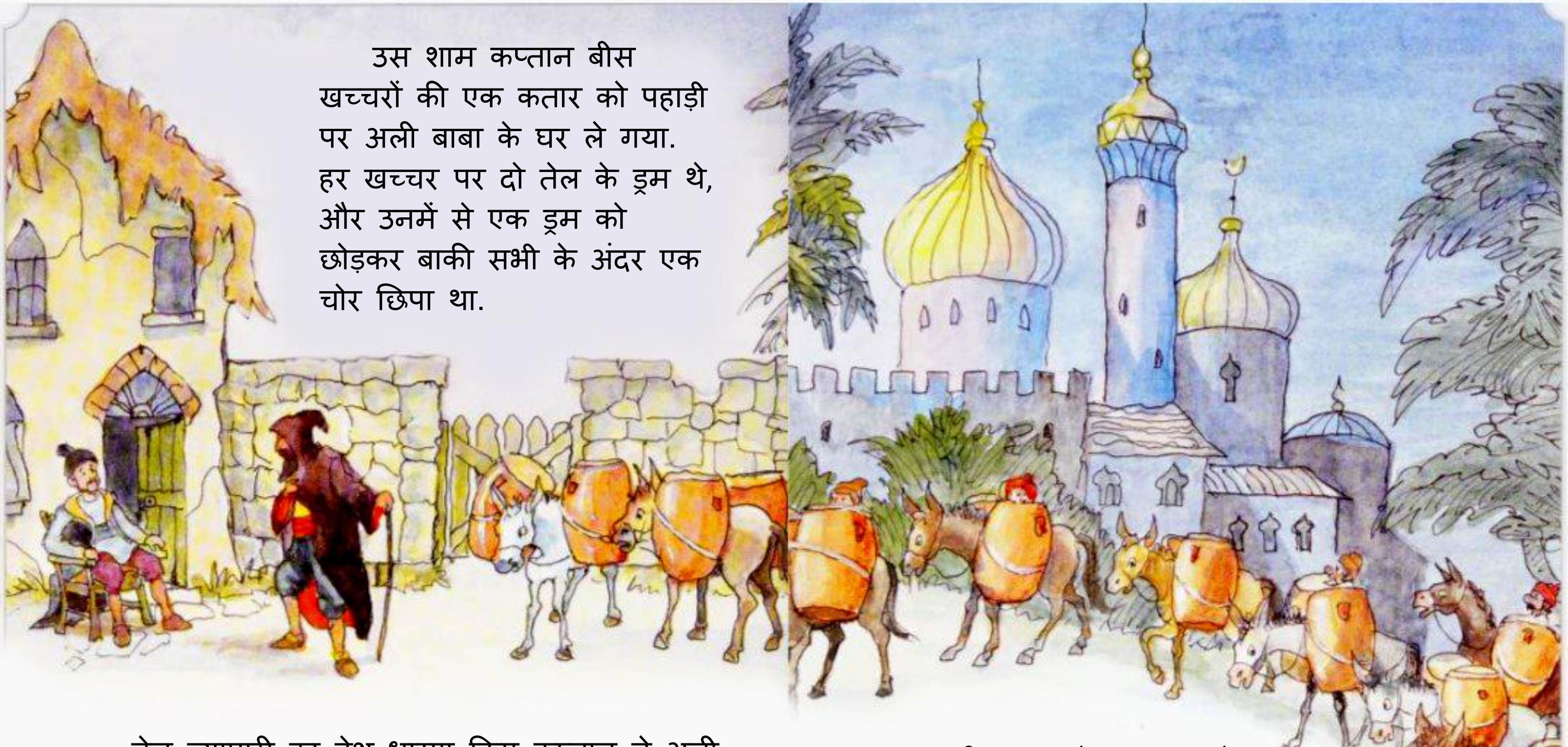

तेल व्यापारी का वेश धारण किए कप्तान ने अली बाबा को प्रणाम किया, जो बाहर बैठकर सुहानी शाम की हवा का आनंद ले रहे थे.

"मैं कल के बाज़ार में अपना तेल बेचने के लिए बहुत दूर से आया हूँ, महोदय," नकली व्यापारी ने कहा, "लेकिन अब ठहरने की जगह ढूँढने में बहुत देर हो चुकी है. अगर आप हमें रात भर के लिए आश्रय देंगे, तो मैं आपका बहुत आभारी मानूंगा."

अली बाबा, जो कप्तान को उसके भेष में नहीं पहचान पाया था, ने आतिथ्य के नियमों का पालन किया. उसने तेल के ड्रमों को आँगन में उतारने और खच्चरों को रात भर के लिए चारा-पानी और अस्तबल में रखने का इंतज़ाम किया. फिर, उसने गंभीरता से झुककर उस नकली तेल व्यापारी को अपने घर आमंत्रित किया.

वह उस अप्रत्याशित मेहमान के लिए कुछ नहीं कर सका, जो - उसे पता भी नहीं था - उसे मारने की योजना बना रहा था! अली बाबा का बेटा अहमद उनके साथ उनकी रसोइया, मोर्गियाना द्वारा तैयार किए गए स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेने के लिए शामिल हुआ.

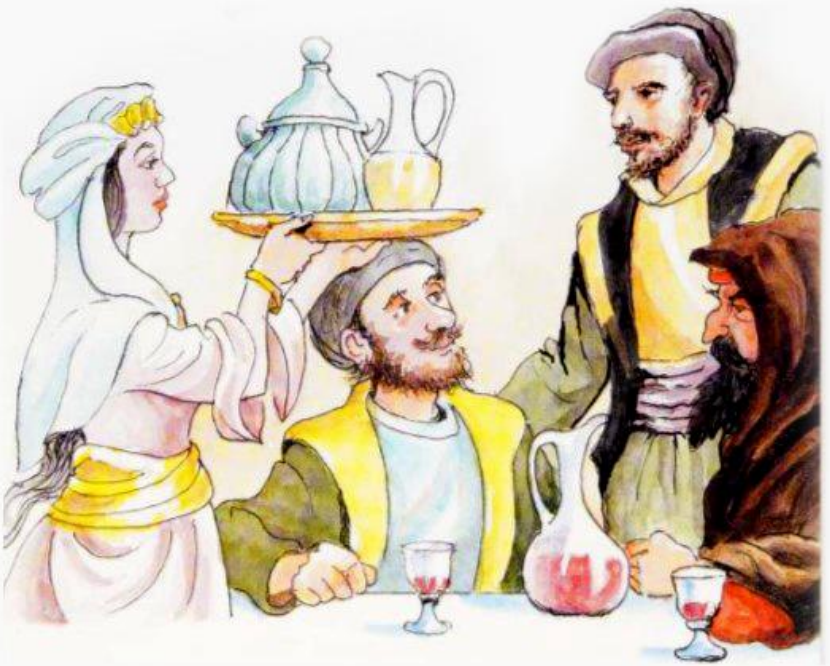

मोर्गियाना एक बहुत ही चतुर लड़की और एक वफ़ादार नौकरानी थी. उसे तुरंत इस तथाकथित तेल व्यापारी पर शक हुआ और उसने उस पर नज़र रखने का फैसला किया.

रात के खाने के बाद तेल व्यापारी ने माफ़ी मांगी और आँगन में चला गया. उसने ड्रमों में मौजूद अपने हर आदमी से फुसफुसाकर कहा, "तुम्हारे ड्रम पर दो दस्तकें: तो आधी रात को हमला करना. अगर तीन दस्तकें: तो सूर्योदय तक इंतज़ार करना."

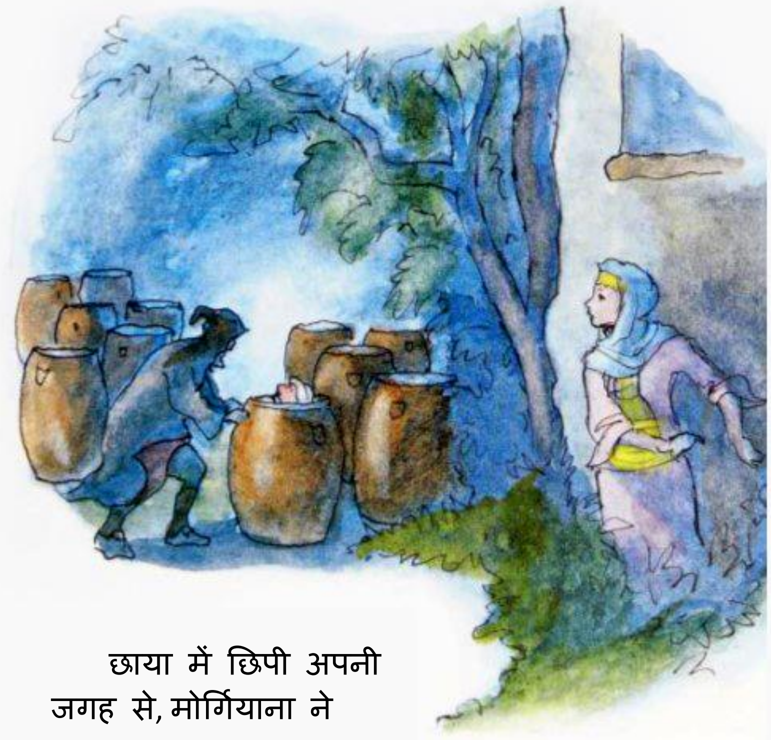

छाया में छिपी अपनी जगह से, मोर्गियाना ने कप्तान का हर शब्द सुना.

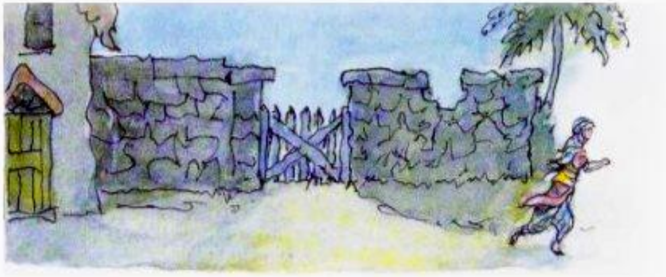

"तो, यही तो उसकी योजना है!" वह हांफते हुए बोली. "कुख्यात चालीस चोर उन घड़ों में छिपे हैं और मेरे मालिक पर हमला करने की फिराक में हैं. मुझे कुछ करना ही होगा!" उसने जल्दी से अली बाबा को बचाने की एक योजना बनाई. फिर चुपके से घर से बाहर निकली और शहर के पहरेदारों के चीफ से बात करने दौड़ी."

साहब, अगर आप सूर्योदय के समय पहरेदारों की एक टुकड़ी पुल पर लाएँ," उसने कहा, "तो आप उन कुख्यात चालीस चोरों के गिरोह को पकड़ सकते जिन्हें आप लंबे समय से गिरफ्तार करने की कोशिश कर रहे है!"

ग्यारह बजे नकली तेल व्यापारी फिर से आँगन में घुसा और वो एक तेल के ड्रम से दूसरे ड्रम तक चलता रहा. उसने हर ड्रम पर दो बार दस्तक दी - आधी रात को हमले का संकेत दिया.

चतुर मोर्गियाना ने भी यह देख लिया. और उसने क्या किया? वह थोड़ी देर रुकी, फिर दबे पाँव तेल के ड्रमों के पास गई और हर घड़े पर तीन बार दस्तक दी. यह सूर्योदय तक इंतज़ार करने का संकेत था!

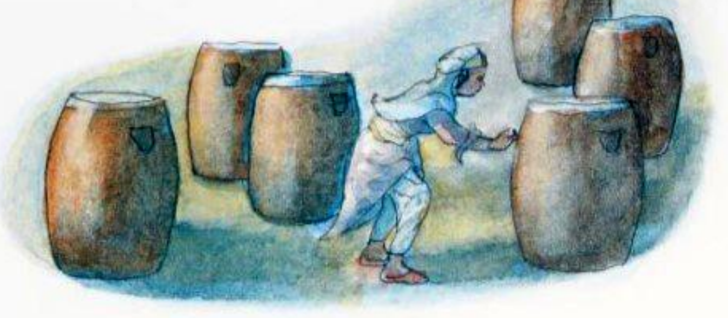

"अब तक तो सब ठीक है," मोर्गियाना ने अहमद को अपनी योजना बताते हुए मन ही मन कहा.

"तुम्हारे पिता खतरे में हैं," उसने कहा. "आँगन में रखे घड़ों में तेल नहीं, बल्कि डाकू हैं, और तथाकथित तेल व्यापारी उनका सरदार है. वे तुम्हारे पिता को मारने आए हैं! भोर से पहले कुछ भरोसेमंद दोस्तों को यहाँ ले आओ ताकि हम उनसे छुटकारा पा सकें."

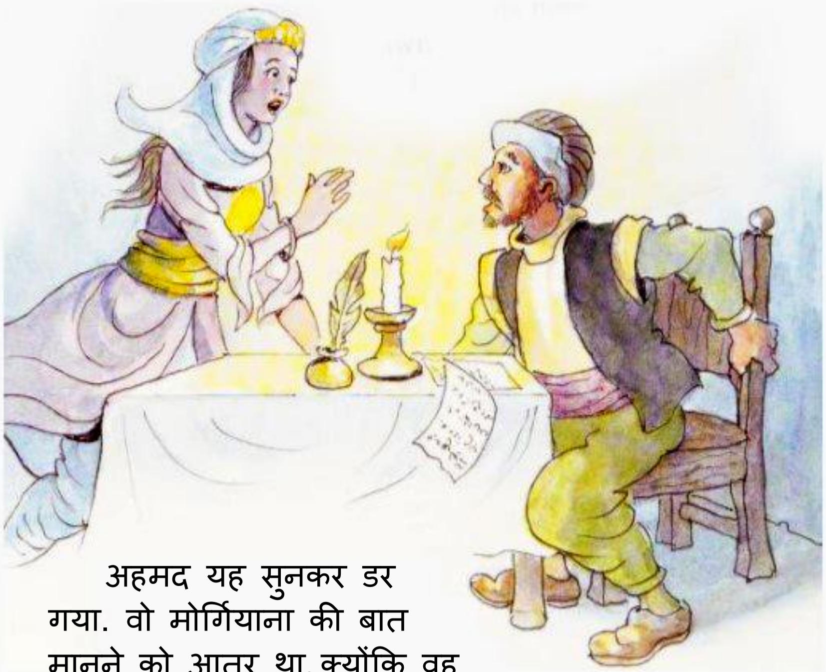

अहमद यह सुनकर डर गया. वो मोर्गियाना की बात मानने को आतुर था, क्योंकि वह मन ही मन उससे प्यार करता था और वह जो भी कहती, वह करने को तैयार था.

सूर्योदय से कुछ पहले अहमद और उसके दोस्त चुपचाप आँगन में इकट्ठा हो गए - कार्रवाई के लिए तैयार. भोर होते ही मोर्गियाना चिल्लाई, "अभी!" और वे ड्रमों की ओर दौड़े, उन्हें पलट दिया और गेट से बाहर लुढ़का दिया.

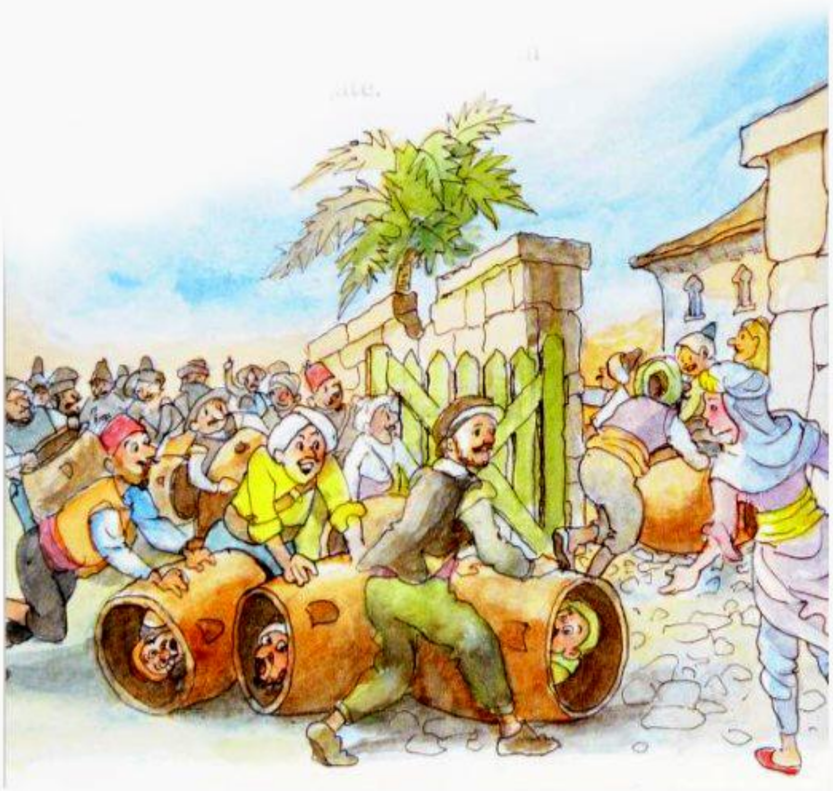

ड्रमों के अंदर बैठे चोर अचानक पकड़े गए और डर और घबराहट में चिल्लाने लगे.

सड़क पर ड्रम तेज़ी से पहाड़ी से नीचे लुढ़कते रहे. जैसे ही वे पत्थरों पर उछले, भयभीत चोर इतनी ज़ोर से चीखे कि पूरा शहर जाग गया.

तेल के ड्रमों को पहाड़ी से नीचे गिरते देखकर लोगों का ध्यान तेज़ी से आकर्षित हुआ और अली बाबा खुद सड़क पर दौड़े, यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है.

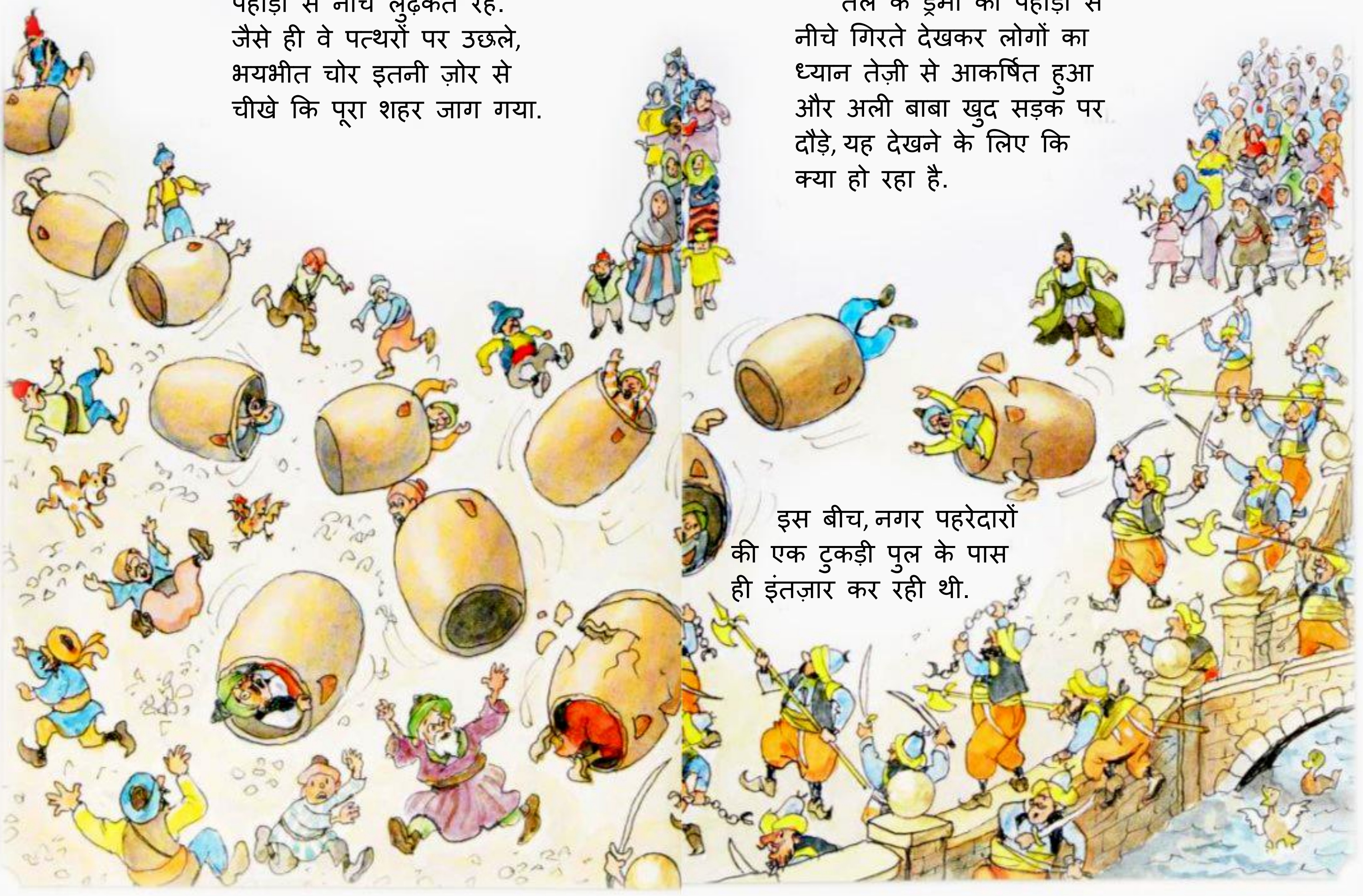

इस बीच, नगर पहरेदारों की एक टुकड़ी पुल के पास ही इंतज़ार कर रही थी.

पहाड़ी के नीचे, ड्रम पुल से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गए. चालीस चोर इधर-उधर बिखर गए. उनको इतने चक्कर आ रहे थे कि वे मुश्किल से अपने पैरों पर खड़े हो पा रहे थे.

पहरेदारों ने इसका फ़ायदा उठाया और घबराए हुए चोरों पर टूट पड़े! उन्होंने चोरों को ज़ंजीरों में जकड़ा और उन्हें तेज़ी से जेल ले गए - जिनमें विश्वासघाती कासिम भी शामिल था.

जब अली बाबा को बताया गया कि कैसे चतुर मोर्गियाना ने ड्रमों के अंदर चोरों को खोज निकाला और उनसे छुटकारा पाने की योजना बनाई, तो उसने उसे चूमा और अपनी जान बचाने के लिए उसे धन्यवाद दिया. उसने कहा, "इसका तुम्हें बड़ा इनाम मिलेगा और तुम मेरे परिवार का हिस्सा बनोगी."

"धन्यवाद, महोदय," मोर्गियाना ने उत्तर दिया, "लेकिन क्या मैं विनम्रतापूर्वक आपको याद दिला सकती हूँ कि चोरों का सरदार - नकली तेल व्यापारी - अभी भी फरार है? मेरा सुझाव है कि हम उसे गुप्त द्वार वाली गुफा में ढूँढ़ें."

मोर्गियाना हमेशा की तरह सही थी.

जब सरदार ने देखा कि क्या हुआ है, तो उसे एहसास हुआ कि उसकी योजनाएँ धरी-की-धरी रह गई थीं. वह अली बाबा के तीन गधों को अपने साथ लेकर गुप्त गुफा की ओर भाग गया, और रास्ते में उसने अपना भेष उतार दिया.

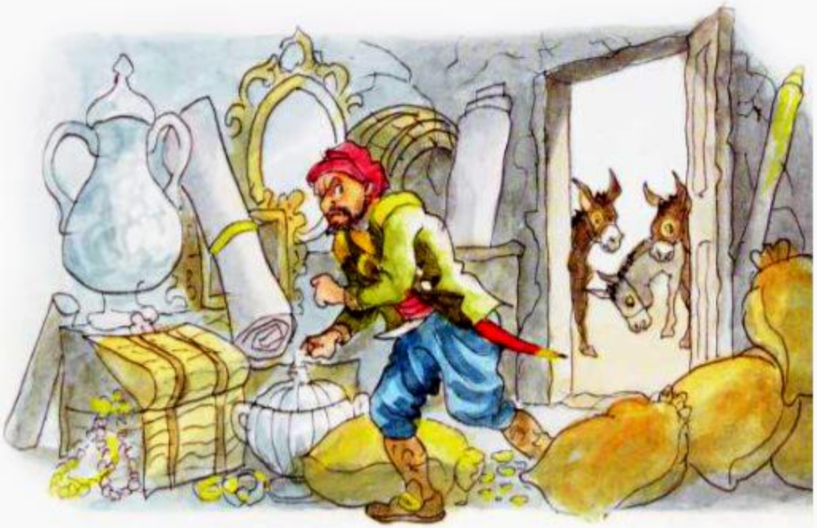

जब वह सुरक्षित अंदर पहुँच गया, तो उसके पीछे दरवाजा बंद हो गया. उसने अंधेरा होने तक इंतज़ार करने का फैसला किया, जब वह गधों के पास जितनी लूट हो सके, उतनी लूट लेकर भाग जाएगा.

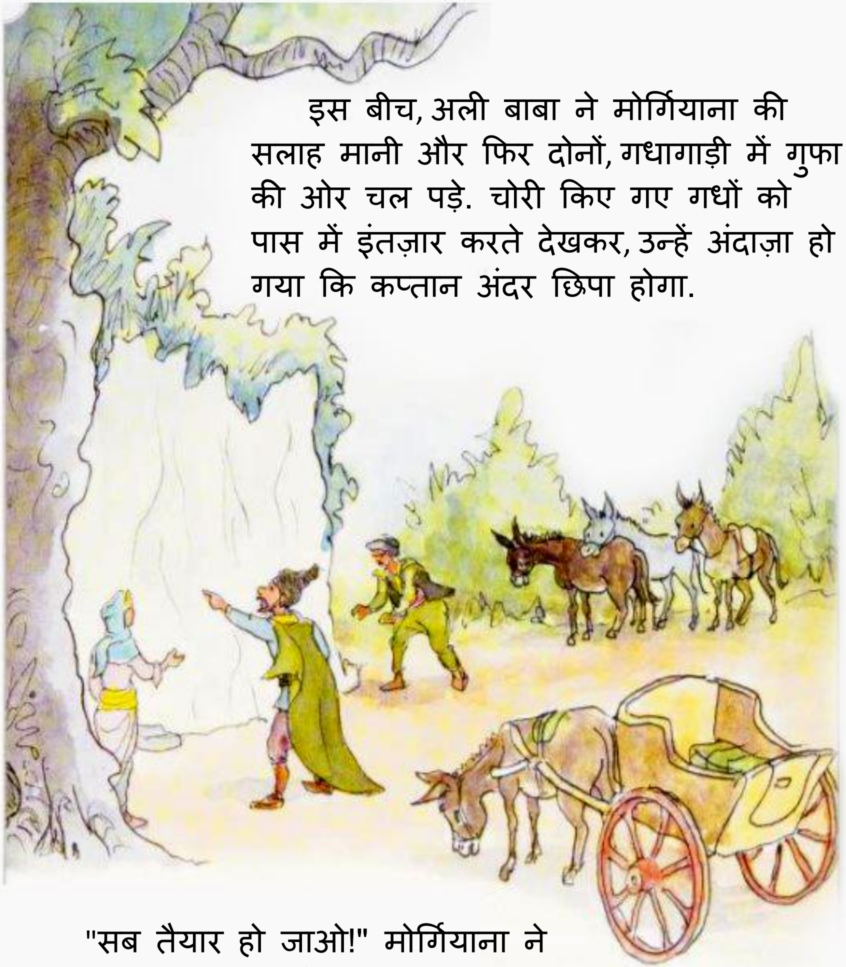

इस बीच, अली बाबा ने मोर्गियाना की सलाह मानी और फिर दोनों, गधागाड़ी में गुफा की ओर चल पड़े. चोरी किए गए गधों को पास में इंतज़ार करते देखकर, उन्हें अंदाज़ा हो गया कि कप्तान अंदर छिपा होगा.

"सब तैयार हो जाओ!" मोर्गियाना ने फुसफुसाते हुए कहा, जैसे ही उन्होंने चट्टान के अंदर गुप्त दरवाज़ा घेर लिया. अली बाबा ने हाथ उठाया और ऊँची आवाज़ में पुकारा: “खुल जा सिम-सिम!”

दरवाज़ा खुला और चोरों का कप्तान तलवार हाथ में लिए गुफा से बाहर निकला. लेकिन अहमद ने उसे इतनी कुशलता से संभाला कि डाकू मुँह के बल गिर पड़ा. अली बाबा ने उससे तलवार छीन ली और मोर्गियाना ने उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बाँध दिए.

और इस तरह कप्तान पकड़ा गया और उसे उसके चालीस चोरों के साथ जेल में ले जाया गया.

अली बाबा और उसका परिवार आखिरकार सुरक्षित हो गया, और साथ में अमीर भी. मोर्गियाना और अहमद ने एक-दूसरे के लिए अपने प्यार का इज़हार किया, और बहुत ही कम समय में बड़े जश्न के साथ उनकी शादी हो गई.

इस प्रकार वे दोनों बहुत खुशी से साथ-साथ रहने लगे और अली बाबा के साथ “खुल जा सिम-सिम!” का रहस्य साझा करते रहे.